E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2020; 2(3): 504-506
Received: 26-04-2020
Accepted: 07-06-2020

डा० शीतल कुमारी
पूर्व गवेषिका,
विश्वविद्यालय–मैथिली–विभाग, ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय,
दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डा० शीतल कुमारी
पूर्व गवेषिका,
विश्वविद्यालय–मैथिली–विभाग, ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय,
दरभंगा, बिहार, भारत

संकलन–संपादन सँ अतीत मंथन तक

डा० शीतल कुमारी

सारांशः
संस्मरण विधाक प्रादुर्भाव पाश्चात्य साहित्यक प्रभावे ँ हिन्दी, बंगलासँ होइत मैथिली साहित्यमे भेल। स्मरण शब्दक अर्थ भेल मोन पाड़ब 'सँ' उपसर्ग लगौने संस्मरणक अर्थ भऽ जाइछ नीक जकाँ मोन पाड़ब। संस्मरणक सम्बन्ध अतीतसँ अछि, यद्यपि संस्मरणक संसार विषयक दृष्टिएँ व्यापक नहि, तथापि संवेदनाक गाम्भीर्य आ आत्मीय स्पर्शक दृष्टिएँ उच्च भावक साहित्यिक विधा अछि। संस्मरण विधा परिमार्जित भऽ चारि भागमे बाँटि– आत्मकथा, जीवनी, यात्रा वर्णन, संस्मरण फराक–फराक श्रेणीमे परिवर्त्तनक संग विस्तार कऽ रहल अछि। संस्मरणक मैथिलीमे बड़ अभाव अछि तथापि किछु ने किछु बरोबरि लिखल जा रहल अछि। एहि क्षेत्रमे सर्वप्रथम छेदी झा अपन जेल जीवनक संस्मरण 'जेल जीवन यात्रा' नामसँ मिथिला मिहिरमे प्रकाशित करबैलनि। तकर बाद एहिमे सबसँ अधिक कार्य कैलनि ज्यो. बलदेव मिश्र जे महा.पं. बच्चा झा, म.म. जय देव मिश्र आदि प्रायः दुइ दर्जनसँ अधिक महान स्वर्गीय आत्माक संस्मरण लिखलनि जे प्रायः 1990 ई. केर पश्चात मिथिला मिहिरमे प्रकाशित भेल।

प्रस्तावनाः
एकैसम शताब्दीक पहिल दशक मैथिली साहित्यक लेल बड़ महत्वपूर्ण अछि। एहि दशकमे मैथिली संविधानक आठम अनुसूचीमे स्थान प्राप्त कऽ लेलक आ एहि दशकमे मैथिली संस्मरण साहित्यमे विस्तार सेहो भेल आ एहिमे संस्मरणक कतेको पोथी प्रकाशित भेल जाहिमे किछु प्रमुख पोथीक नाम अछि– कन्यादान फिल्मक नेपथ्य कथा 2003, संस्मरणक संग 2004, स्मृतिक धोखरल रंग 2004, ओ दिन ओ पल 2005, आँखि मुनने आँखि खोलने 2005, कतेक डारिपर 2006, संघर्ष ओ सेहन्ता 2006, बीतल दिन आ बिसरल लोक 2007, अतीत मंथन 2010।
श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क दू टा संस्मरण छनि– 'अतीत मंथन' ओ 'कन्यादान फिल्मक नेपथ्य कथा'। विवेच्य संस्मरणक प्रकाशनक सम्बन्धमे ई स्वयं लिखैत छथि– ''आचार्य सुमन जखन अपन संस्मरण 'मन पड़ैत अछि' लिखि छपा रहल छलाह तँ जेना आदेशक स्वरमे कहलनि– अहूँ आत्म–संस्मरण लिखिए लेब। हम प्रतिवाद करैत कहलियनि हमरा सन अति सामान्य लोकक आत्म संस्मरणक उपादेयता की? मुस्कुराइत कहलनि– छिड़िआयल रुद्राक्षक कोनो उपयोगिता नहि, मुदा एक–एक दानाके ँ गाँथि जखन ओ मालाक रूप धारण कऽ लैत छैक, तखन ओहिपर शत–सहस्त्र इष्टक जाप भऽ पबैत छैक, अहाँ अपन जीवनमे द्रुत गतिएँ, सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा प्रशासनिक परिवर्तन होइत देखलिऐक अछि। ताहि सभके ँ अपन अनुभवक आधार पर लिपिबद्ध कऽ देबैक आ लिखि लेलाक बाद एक तटस्थ पाठक जकाँ अपने पढ़ि जयबैक तँ सभ प्रश्नक उत्तर स्वतः भेटि जायत।'' [1]
श्री अमरजी अतीत मंथनक रचना चौरासी वर्षक अवस्थामे कयलनि। ई एहि पोथीमे माय–बहिनक मुँहसँ सुनल अपन जन्मक समयक घटनासँ आरम्भ करैत चौरासी वर्षक अवस्था (1925–2009) केर दीर्घकालावधिक इतिवृत्ति अपन आख्यासँ जाहि विरल तन्मयताक संग देलनि अछि ताहिमे हम अपन अतीतमे साफ–साफ देखि सकैत छीं कहैत छथि– ''जन्मक बाद हमर चीत्कार तते जोर तथा तते काल धारि चलैत रहल जे हमरा घरक चारू कातक आङ्नक लोक सब जागि गेल–हमर निकटतम पड़ोसी इन्द्रधर झा जे ओहि समय गामभरिमे सबसँ जेठ रहथि, जनिका गामक अधिकतर लोक इनर्धर बाबा कहैत छलनि, से हमर चीत्कार सुनि हमरा नाम 'भोकरन' धयने रहथि।'' [2]
एहि पुस्तकक सम्बन्धमे लेखक कहैत छथि– ''अन्यान्य बन्धु लोकनि आत्मकथा लिखबाक आग्रह कयलनि, किन्तु आचार्य सुमन आत्म–संस्मरण लिखबाक आदेश देलनि। आत्मकथा तथा आत्म संस्मरण सुनबामे एकरङाहि लगैत छैक, किन्तु दुनूमे तात्विक अन्तर छैक। आत्मकथा कोनो महात्मा लिखि सकैत छथि, कारण मानव जीवनमे, सत्कर्म, असत्कर्म, कुकर्म ओ दुष्कर्म कखनहुँ अज्ञानवश कखनहुँ मानसिक आवेगवश असत्कर्म कयल जाइत छैक, किन्तु कुकर्म वा दुष्कर्म जानि बूझिकऽ कयल जाइत छैक। जाबत धरि सभक उद्घाटन नहि होइत छैक ताबत धरि ओ आत्मकथा नहि कहौतैक। से कोनो महात्मे द्वारा साहस कयल जा सकैत अछि। हम ने महात्मा छी जे साहस कऽ सकीं तखन दुरात्मा सेहो नहि छी जे अनकर उत्कर्ष देखि इर्ष्याक ज्वालामे अपनाके ँ दग्ध करैत

रहैत अछि। सामान्य लोक छी, जीवनक जे सामान्य अनुभूति अछि ताहि आलोकमे हम आत्म विश्लेषण हेतु प्रवृत्त भेलहुँ अछि। [3]
एहि पुस्तकक अवलोकन कयलापर बुझना जाइछ जे अमरजी आरम्भेसँ स्वाभिमानी, विद्याव्यसनी, जिद्दी, कनेक उत्पाती, मुदा सभक लेल सहृदय आ सहयोगी भाव रखनिहार व्यक्ति छथि। ई बच्चेसँ कतेक जिद्दी ओ अपन बात पर अड़ल रहऽवला व्यक्ति छथि तकर एकटा उदाहरण देखल जाउ– ''एहि बेर माय कहलनि– एकरा छाल्ही खोआ कऽ बिदा करैत छिऐक तेँ घूरि अबैत अछि, एहि बेर दागि कऽ बिदा करबैक। हमरा एहि बातक चोट जेना मर्म पर जाय लागि गेल। एहि मध्य हमरा परिवारमे दूटा शुभकार्यभेलैक, बच्चाभाइक विवाह द्विरागमन, एक बालकक जन्म, हमर बहिनक ढंगा पुबारि टोल विवाह–द्विरागमन भऽ गेलनि। हमर अनुज विन्ध्य नाथ तथा भौजी सहित नवजात बालकक मृत्युभऽ गेलनि। लोक बौंसि कऽ रहि गेल, हम खोजपुर दिस नहि तकलहुँ'' [4]

'कन्यादान फिल्मक नेपथ्य कथा'– कोनो घटना स्थल आ व्यक्तिसँ सम्बन्धित अनुभूति लेखकक हृदय पटल पर अंकितभए ओकर मनके उद्वेलित करैत रहैछ। ओ अभिव्य क्तिक रूपमे आबि संस्मरण बनि जाइछ। लेखकक जीवनमे कतेक एहन क्षण अबैछ जखन एहन व्यक्तिसँ ओकर सम्पर्क होइछ जकरा ओ आजीवन स्मरण रखैछ। ओकर स्मृति जे निरन्तर अन्तरालमे विद्यमान रहैछ, भावावेशमे स्मरणक रूप मे निःसृत होइछ। संस्मरण लेखकक निजी जीवनक सत्य घटनापर आधारित होइछ। [5]
विवेच्य पुस्तक एकटा डायरी पर आधारित अछि जाहिमे कल्प नाक कोनो गुंजाइस नहि सब यथार्थवत अछिं लेखकेक शब्दमे देखल जाय– ''जे हेतु ई डायरी थिक तेँ एहिमे कल्पनाक कोनो आश्रय नहि लेल गेल अछि, जे सत्य घटना अछि ताहिपर कोनो आवरण नहि देल गेल अछि। कतोक प्रसंग एहन अछि जे किछु कटुक्ति सेहो लगैछ, परन्तु तकरो सबकेँ हम यथावत उपस्थित करबाक धृष्टता कऽ रहल छी। सत्यक अपलाप नहि हो तेँ एहि उल्लेखक हेतु सुधी पाठक क्षमा करथि से निवेदन।'' [6]
लेखक एहिमे 17.7.64 सँ 6.9.64 धरिक गप्प लिखलनि अछि। एकर आरम्भ होइत अछि 18 जुलाइक रात्रि पटनासँ, संगमे छथिन हास्य सम्राट प्रो. हरिमोहन झा, ई तँ स्वयं अपने हास्य रसिक दोसर संगमे हास्य–सम्राट तकर यात्रा वृत्तान्त जँ होइत तँ अपूर्व, मुदा से नहि अछि, जँ रहिते तँ अपूर्व हास्य साहित्य प्रस्तुत भऽ जाइत।
ई पुस्तक मैथिली साहित्यमे अपना सन एसगरे अछि। ओहिसँ पहिने सुभद्र झाक 'नातिक पत्राक उत्तर' छपल छनि, श्रीशंकरदेव झाक संपादकत्वमे 'अमरजीक परिचय संसार ओ पत्राचार' छपल छनि मुदा ओ सब पत्र पर आधारित छल आ ई डायरी पर। अपन दैनिक चर्याक उल्लेख कऽ ओकरा पुस्तक रूमपे छपायब हमरा जनैत मैथिलीमे ई एकटा नब विधा अछि। ई संस्मरण हरिमोहन झाक प्रसिद्ध उपन्यास 'कन्यादान' कऽ आधार पर बनल सिनेमा कन्यादानसँ सम्बन्धित अछि।
उपर्युक्त दुनू पुस्तकक अतिरिक्त हिनका द्वारा लिखल गेल संस्मरण पत्र–पत्रिकामे छिड़िआयल अछि जे एखन धरि पुस्तकाकार नहि भेल अछि जेना– 19 जुलाइ 1970 केँ मिथिला मिहिरमे पकाशित 'अश्रु तर्पण'। ई तर्पण लेखक अपन बड़का भायकेँ समर्पित कयने छथि। 'बड़का भाय' माने रामकृष्ण झा 'किसुन'। एहिमे हिनका दुनूक मित्रता, किसनुजीक कर्मठता, कार्यदक्षता, मैथिलीक प्रति सेवाभाव आदिक चर्चा कैलनि अछि। एहिमे कैकठाम किसुनजीसँ जुड़ल छोट–छोट संस्मरणक चर्चा कयलनि अछि। किसुनजीक व्यक्तित्वक सम्बन्धमे लेख लिखने छथि– ''रहन–सहन खान–पानमे एकदम रइसीं लत्ता कपड़ा एकम स्फीत, समयक बन्धनमे एकदम जकड़ल, कतहु रहताह बाट–टाकेँ छोड़ि केहनो असुविधाजनक स्थामने नियत समय पर नित्य कृत्य कऽ निर्धरित समय पर उपस्थित। सतत एकटा मौलिक चिन्तनमे निरत। यात्राक हेतु पृथक एकटा सेट जाहिमे तोसक पर्यन्तं...। [7]

राज पण्डित बलदेव मिश्र– लेखक कहैत छथि जे संसारमे जँ डर आ धाख हुनका ककरोसँ होइत छल तँ हिनके सँ हिनका सम्बन्धमे लेखकक उक्ति छनि– एखन धरि जीवनक जतबा अंश बिता सकलहुँ अछि, एको क्षण हिनक अभिभावकत्वसँ फराक नहि रहलहुँ। [8]

मैथिलीक आन्दोलन आ किरणजी– लेखककेँ किरणजीसँ पहिल परिचय 1947 इ.मे बरहगोड़ियामे मैथिली साहित्य परिषदक अधिवेशनमे भेलनि। मैथिलीकेँ स्वतंत्र भाषा सिद्ध कऽ शिक्षा विभाग द्वारा पठन–पाठनमे स्वीकृति दिअयबामे सर्वप्रथम किरणेजीक ध्यान गेलनि। ई मैथिलीक विकासक लेल काशीमे प्राप्त होइत अर्थ ओ यशप्रतिष्ठाकेँ लात मारि अपन गाम आबि गेलाह। मैथिली भाषा ओ मैथिलीक संस्था समितिक लेल किरणजी हर क्षण आगू रहलाह। द्रष्टव्य अछि ई पंक्ति– ''1948 मे लहेरियासरायमे हिन्दी भाषाक समर्थक लोकनिक संग मिलि कऽ विद्यापति गोष्ठी नामक संस्थाक संगठन कयल जकर संक्षिप्त इतिहास हम संकल्प लोक, लहेरियासरायसँ स्मारिकामे 1987 मे प्रकाशित करा चुकल छी। पहिने किरणजी विरोध कयलनि किन्तु जखन अपन नीति स्पष्ट कैलियनि, तँ पूर्ण प्रसन्न भऽ समर्थने नहि कैलनि अपितु पीठ ठोकि देलनि तथा विद्यापति गोष्ठीक जे योजना छल ताहिमे शतशः सहयोग कयलनि।'' [9]
एहि सभक अतिरिक्त हिनक कतेको संस्मरण सब पत्र–पत्रिकामे छिड़िआयल अछि जे एखन धरि पुस्तकाकार नहि भेल अछि।

संकलन सम्पादनः संपादनक पवृत्ति अमरजीमे बच्चेसँ भेटैत अछि। छात्रावस्थामे विद्यालयक हस्तलिखित पत्रिकामे हिनक योगदान रहैत छलनि या कहि सकैत छी यैह सभमे आगू रहैत छलाह। हिनक सम्पादनक लाभ मैथिलीए भाषा टाकेँ नहि भेटलैक अपितु ई मैथिली हिन्दी दुनू भाषामे संपादन कयलनि। हिनक संपादित कृति हिनक मौलिक कृति आ अनुदित कृतिसँ कनेको कम नहि छनि। सम्पादनक धैर्यपूर्ण दायित्वक निर्वहण ई सहज रूपेँ करैत आ मातृभाषाक अनन्य सेवाक उद्देश्येँ नूतन प्रौढ़ सभ प्रकारक प्रतिभाकेँ साहित्यिक क्षितिज पर अनबाक हेतु प्रयत्नशील रहलाह अछि। संपादनक दायित्वक दृष्टिएँ हिनक दुइ गोट ढंग भेटैत अछि। पत्र–पत्रिकाक संपादन आ पुस्तकक सम्पादन, ओहूमे दुइ गोट प्रकार अछि स्वतंत्र सम्पादन आ संग सम्पादन।

पत्र–पत्रिका सम्पादनः पत्र–पत्रिका राष्ट्रक उद्घोष होइत अछि आ ई युगक प्रतिनिधित्व करैत अछि। जनमानसमे चेतनाक अमर संजीवनी भरैत अछि। मैथिलीमे गद्यक विकासमे पत्र–पत्रिकाक योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि। पत्रिकाक प्रकाशनक पश्चातेसँ गद्यक विभिन्न विद्या यथा–निबन्ध, कथा, साहित्य, नाट्य कृति तथा समीक्षा आदिक विकास भऽ सकल प्रायः स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद मैथिली साहित्यक विकासमे सर्वाधिक योगदान पत्र–पत्रिकेकेँ छैक।
छात्रावस्थेसँ पत्रकारिता ओ सम्पादनसँ रुचि रखनिहार श्रीअमरजी म.र. संस्कृत महाविद्यालय छात्र–संघ ओ नवरत्न गोष्ठी, दरभंगाक हस्तलिखित पत्रिकाक संपादन कैलनि। पत्रिकाक नाम छल 'चेतना'। एहि प्रसंग अमरजी अपन आत्म संस्मरण 'अतीत मंथन'मे लिखैत छथि– ''मासिक हस्तलिखित पत्रिकाक नामकरण भेलै 'चेतना'। सुन्दर अक्षर लिखनिहार दू गोट छात्र पत्रिकाक दू प्रति तैयार करथि। पारिश्रमिक रूपमे हुनका लोकनिकेँ 64 पृष्ठक एक कॉपी देल जाइनि। तेँ बहुत छात्र सुन्दर अक्षर लिखबाक हेतु प्रेरित भेलाह। एहि तरहेँ पाठ्य ग्रन्थसँ अतिरिक्तो रचनात्मक

प्रवृत्ति छात्र लोकनिक मध्य विकसित होयबाक सम्भावनामे वृद्धि भेलनि। [10] एहि बातसँ ई अनुमान लगाओल जा सकैत अछि जे अमरजी छात्रावस्थेसँ एतेक तीक्ष्ण बुद्धिक छलाह।

निर्माण– 1952 इ. सँ 'निर्माण' पत्रिकाक प्रकाशन भेल जकर सम्पादक जानकी नन्दन सिंह छलाह। ई हिन्दीक पत्रिका छल जकर स्वरूप साप्ताहिक छलैक। 1954 मे एहि पत्रिकाक सम्पादक अमरजी भेलाह। ई एहिमे मिथिला मिहिरेक सदृश मातृभाषा मैथिलीयो के स्थान दियौलनि। ई एकर सम्पादन दू वर्ष धरि करैत रहलाह।

स्वदेश– 1955 मे दरभंगासँ स्वदेश पत्रिकाक प्रकाशन प्रारम्भ भेल एकर स्वरूप दैनिक छल। ई स्वदेशक सम्पादन–प्रबन्धन–वितरणमे तन–मन–धनसँ लागल रहलाह। दोसर खेप जखन 1983 मे स्वदेशक प्रकाशन आरमभ भेल तँ ताहूमे हिनक सहभागिता पूर्ववते रहलनि। अमरजी स्वदेशक प्रति समर्पित रहलाह। स्वदेशक प्रकाशनक समय ई 'जय स्वदेश'क नारा लगौलनि आ सहयोगी लाकनिकेँ एक दोसरासँ भेट भेला पर नमस्कारक स्थान पर अभिवादन हेतु जय स्वेदशक परिपाटी चलौलनि।

इजोत– 1960 इ.मे दरभंगासँ इजोत नामक मासिक पत्रिकाक प्रकाशन प्रारंभ भेल। एकर सम्पादक मण्डलमे सुरेन्द्र झा 'सुमन', सुधांशु शेखर चौधरी, चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' छलाह। ई एकटा समीक्षा प्रधान पत्रिका छल एकर मात्र तीन अंक प्रकाशित भेल।
अस्तु आधुनिक मैथिली साहित्यक विकासमे 'स्वदेश' ओ 'वैदेही'क योगदान अनुपम रहल अछि। एहिसँ अतिरिक्त अन्य कतोक पत्र–पत्रिकाक प्रकाशन ओ सम्पादनमे हिनक महत्वपूर्ण योगदान रहलनि अछि।

पुस्तकक सम्पादन ओ संकलनः हिनका द्वारा पोथी सम्पादनक दुइ गोट कोटि भेटैत अछि– संकलन सम्पादन ओ कृति सम्पादन। संकलन संपादनक अन्तर्गत चारिगोट वर्ग कयल जा सकैछ– सामान्य संकलन, प्रतिनिधि संकलन, पाठ्य पुस्तक ओ स्मृति, अभिनन्दन ग्रंथक सम्पादन, कृति सम्पादनक सेहो दुइ गोट कोटि अछि– सनामक सम्पादन ओ अनामक सम्पादन। सनामक सम्पादनसँ तात्पर्य ओहि कृति सभक सम्पादनसँ अछि जाहिमे सम्पादकक रूपमे हिनक नामक उल्लेखभेल अछि। दोसर दिस अनामक सम्पादित कृतिमे सम्पादकक रूपमे हिनक नामक उल्लेख नहि अछि मुदा कतहु 'भूमिका', कतहु 'आमुख, कतहु 'दू शब्द'क संग ई प्रस्तुतभेल छथि। आ जँ सेहो नहि तँ हिनक स्मरणक अनुसार ओहि कृतिक प्रकाशन–पूर्व तैयारीमे हिनक सक्रीय भूमिका रहल छलनि। वस्तुतः अनामक सम्पादन अमरजीक सम्पादकीय व्यक्तित्वक ओ अंश थिक जकरा माध्यमे ओ समसामयिक नूतन वा प्रौढ़ सभ प्रकारक प्रतिभाकेँ साहित्यिक क्षितिज पर अनबाक हेतु प्रयत्नशील रहैत छलाह। हिनक एहि व्यक्तित्वक लाभ मैथिलीकेँ रामकृष्ण झा 'किसुन' आ दीनानाथ पाठक 'बन्धु' सदृश प्रतिभासँ भेलैक। [11]
मैथिलीमे हिनका द्वारा संकलित ओ सम्पादत पोथी निम्नलिखित छनि– विद्यापतिक देशमे, लोचन, विजय शंख, पद्य प्रसून, विद्यापति सूक्तितरंगिनी, स्वातन्त्रय स्वर, प्रतिनिधि एकांकी, कथा किसलय, साहित्यालोक, मैथिली नवीन साहित्य सुमन, जीवनिका, पश्चिमोत्तर यात्रा वा कश्मीर यात्रा, विद्यापति नीति तरंगिणी, कविता। संग्रह, कविवर जीवनझा रचनावली, ललितनारायण मिश्र स्मृति ग्रन्थ, श्री सुमन साहित्य सौरभ, चाणक्य, त्रिवेणी, धूकल केरा, तीन सप्तक, ताण्डव, त्रिकुशा, गंगा तरंगावली, दुर्गासप्तशती, मैथिली सुधा, द्वादशी, वटसावित्री, राधाविरह, मैथिली बालरामायण, कवीश्वर चन्दा झा, किछु देखल : किछु सुनल, सुभद्राहरण, द्रोहाग्नि, जगले रहबै, आधुनिक मैथिली रंगमंच, लाबनि परक दीप, सन्धि–समास, सुरेन्द्र झा सुमन रचना संचयन मैथिली पदावली आदि।

निष्कर्षः
अस्तु कहि सकैत छी जे आचार्य सुमनजीक अपेक्षाक अनुकूल अपन जीवनमे आयल सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं संदर्भित राजनीतिक चित्र उरेहबा लेख सफलो भेलाह अछि। एहि तरहेँ मैथिली संस्मरण साहित्य मध्य एहि ग्रन्थक अतीत मंथनक सार्थकता प्रमाणित होइत अछि। अतः कहि सकैत छी जे ई रचना मैथिली साहित्यिक कालजयी कृतिक रूपमे मान्य होयत। हिनक सम्पादनक लाभ राष्ट्रभाषा हिन्दी आ मातृभाषा मैथिली दुनूकेँ भेटलैक। खाहे पत्रिकाक सम्पादन हो वा पुस्तकक सम्पादन हो ई अपन काज अनवरत करैत रहलाह।

संदर्भ सूचीः

1. अतीत मंथन, श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', नवरत्न गोष्ठी, दरभंगा, 2010, पृ.– 7
2. तथैव, पृ.– 10
3. तथैव, पृ.– 8
4. तथैव, पृ.– 21–22
5. परिचय प्रसून
6. 'कन्यादान फिल्मक नेपथ्य कथा', श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', नवरत्न गोष्ठी, दरभंगा, 2003, पृ.– 5
7. मिथिला मिहिर, श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', 19 जुलाइ, 1970, पृ.– 11
8. मिथिला मिहिर, श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', 24 जनवरी
9. उद्यान किरण, श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', अंक 5, 2017, पृ. – 14
10. अतीत मंथन, श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', नवरत्न गोष्ठी, दरभंगा, 2010, पृ.– 30
11. श्री अमर अर्चना, पृ.– 263